बच्चों पर कहानी सुनाने का प्रभाव

सोनिया खुदनपुर

शुरुआती दिनों में रुद्रप्रयाग के सरकारी स्कूलों का दौरा करते समय मैं भाषा-शिक्षण की कई विधियों का प्रयोग किया करती थी, जिनके बारे में तब तक मैंने केवल पढ़ा था या बात की थी। इनमें से कहानी सुनाने की विधि हमेशा सफल होती थी। मैंने देखा है कि बच्चों को कहानी सुनाने के मामूली ही सही, किन्तु लगातार सकारात्मक परिणाम देखने को मिलते हैं— जैसे, वे बेहतर तरीक़े से ध्यान केन्द्रित कर पाते हैं, किताबों में उनकी रुचि विकसित होती है, उनमें बातचीत या लेखन के माध्यम से अपनी बात को व्यक्त करने की इच्छा जागती है आदि।

मैं कहानी सुनाने या कहने में कोई विशेषज्ञ नहीं हूँ। इसलिए मैंने फ़ैसला किया कि कहानियाँ सुनाने के लिए मैं सबसे पहले कहानियाँ पढ़ूँगी और उन्हें याद करूँगी और बच्चों को कहानियों की नई किताबों के सम्पर्क में लाऊँगी। जिन स्कूलों में मैंने कुछ महीने बिताए उनमें से एक स्कूल में, मैं हर दिन कहानियों की कुछ नई किताबें ले जाती थी और एक या दो कहानियों को याद करके उन्हें अपने शब्दों में सुनाती थी। मैंने स्कूल में जितना समय भी बिताया, वह बच्चों से दोस्ती करने और कहानी सुनाने के प्रभावों का अवलोकन करने के लिए पर्याप्त था।

शुरुआती दिन बहुत रोमांचक थे। बच्चे यह जानने के लिए उत्सुक रहते थे कि मैं अपने साथ क्या लाई हूँ। वे कक्षा के दौरान मुझसे किताब देने को कहते या पास आकर खड़े हो जाते और किताब देखने की कोशिश करते। वे हमेशा यह देखने के लिए उत्सुक रहते थे कि मैं कौन-सी नई किताबें अपने साथ लाई हूँ। वे जो कहानी सुनाने का अनुरोध करते, मैं वही कहानी पढ़ती या सुनाती।

जब भी ख़ाली समय मिलता, मैं बच्चों को वह किताबें देती। शुरू में तो बच्चे उन्हें अपने हाथों में लेकर देखते, उसके पन्नों को उलटते-पलटते, उसके चित्रों को देखते और जल्द ही लौटा देते। बहुत कम बच्चे ऐसे थे जो पढ़ने की कोशिश करते। जिनको किताबें अच्छी लगतीं वे उसे पढ़ने की कोशिश करते, भले ही वे केवल पुस्तकों के शीर्षक ही क्यों न हों, और जिनको लगता कि वे अच्छी नहीं हैं वे बस चित्र देखते, पन्ने पलटते और कहते, “मैं नहीं पढ़ सकता।” हालाँकि वे वर्णमाला जानते थे, अक्षरों की ध्वनि जानते थे और रोज़ाना पढ़ना-लिखना उनकी स्कूली दिनचर्या का हिस्सा था; इसके बावजूद वे ऐसा कहते थे। शुरुआत में तो प्रोत्साहन का कोई ख़ास प्रभाव नहीं हुआ। लेकिन जैसे-जैसे सप्ताह बीतते गए, कुछ ऐसा हुआ कि जो बच्चे आत्मविश्वासी नहीं थे, वे भी अधिक कहानियों की माँग करने लगे।

दूसरी कक्षा में पढ़ने वाले अमन को शरारती और ध्यान भंग करने वाला माना जाता था। उसके शिक्षक का मानना था कि वह केवल बोर्ड से या अपने सहपाठियों की नोटबुक से अच्छी तरह से नक़ल कर सकता है। उसने शायद ही कभी अपना होमवर्क किया हो और कक्षा में तो वह कभी ज़्यादा रुचि नहीं लेता था। वह बहुत चुलबुला था और हमेशा शरारत करता रहता था। कहानियों की जो किताबें मैं स्कूल ले जाया करती थी, अमन ने उन्हें देखने में ज़्यादा दिलचस्पी नहीं दिखाई। यदि कोई अन्य विद्यार्थी पढ़ रहा हो तो वह ताका-झाँकी करता, मज़ाक करता, टीका-टिप्पणी करता और फिर अपनी सीट पर वापस चला जाता। वह अपने आप कुछ पढ़ेगा, इसकी तो उम्मीद ही नहीं की जा सकती थी और कोई कोशिश काम नहीं आ रही थी। जब मैं कोई कहानी सुनाती तो अमन में इतना धैर्य ही नहीं था कि बैठकर उसे सुने। वह तो इधर-उधर भागना, किसी के साथ खेलना या लड़ना चाहता था।

लेकिन कहानियों के बारे में कोई बात तो ऐसी थी जिसने अमन का ध्यान आकर्षित किया। कहानी के शुरुआती सत्रों में वह मेरे क़रीब खड़ा होता, कुछ मिनटों के लिए सुनता, उसी शैली में एक पंक्ति दोहराता और समूह छोड़कर चल देता। ऐसा वह बार-बार करता। फिर धीरे-धीरे यह कम होता गया। एक स्थिति ऐसी भी आई जब वह न केवल मेरे बाद दिलचस्प वाक्यांश दोहराता बल्कि मुझे आगे की कहानी सुनाने के लिए कहता : फिर? या फिर से, फिर से कहता। वह चाहता कि या तो मैं वही कहानी फिर से सुनाऊँ या कोई दूसरी कहानी सुनाऊँ।

यह बदलाव काफ़ी उत्साहजनक था। एक दिन, मैंने उससे पूछा, “मैं तुम्हारे लिए एक कहानी पढ़ूँ?”

उसने कहा, “ठीक है।”

“क्या तुम मुझे शेल्फ़ से कोई किताब चुनकर दोगे?” मैंने कहा।

अमन ने मुझसे रफ़्तार ख़ान का स्कूटर शीर्षक कहानी पढ़वाई। मैं घबरा गई क्योंकि मैंने वह कहानी पहले नहीं पढ़ी थी। मैंने शब्दों पर अपनी उँगली रखते हुए जितना हो सके उतनी भावाभिव्यक्ति और स्वरों के उतार-चढ़ाव के साथ कहानी

पढ़ी। अगर उसे कोई पंक्ति पसन्द आती तो वह उसे बहुत ही धीरे-से दोहराता, पहले मेरे बाद, फिर मेरे साथ। वह पंक्तियों पर ध्यान दे रहा था। अगर मुझसे कोई शब्द या एक पृष्ठ छूट जाता तो वह मुझे बता देता। उसकी भागीदारी को देखकर मैं बहुत ख़ुश हुई।

मैंने एक बात तय की थी कि मैं हमेशा बच्चों के साथ उनके समान स्तर पर ही बैठूँगी ताकि यदि वे चाहें तो पुस्तक को देख और छू सकें। अमन ने मुझसे इस कहानी को कम से कम छह से सात बार पढ़वाया। उसने कहानी की पंक्तियों को लगभग याद कर लिया था। अब उसने अधिक पुस्तकों को चुनना शुरू कर दिया और मुझे यह भी बताना शुरू कर दिया कि वह किस तरह की कहानियाँ सुनना चाहता है।

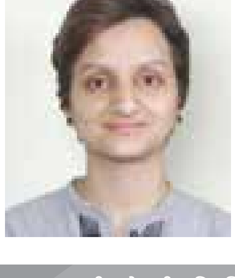
बेहतर तरीक़े से पढ़ने में उसकी मदद करने के लिए एक कहानी पढ़ने के बाद मैंने कक्षा से पूछा, "क्या हम इसे अपनी नोटबुक में लिखें?" उन्होंने हामी भरी।

मैंने बोर्ड पर लिखना शुरू किया। एक छात्रा ने पूछा कि क्या वह भी बोर्ड पर एक पंक्ति लिख सकती है। फिर अमन ने भी ऐसा ही करने को कहा। मैंने दोनों से कहा कि वे आकर बोर्ड पर लिखें। अब अमन के एक हाथ में किताब थी, दूसरे में चॉक, और वह साफ़-स्पष्ट तरीक़े से लिखने की कोशिश कर रहा था। वह इसमें कामयाब रहा। जो कुछ उसने लिखा था उसे वह पढ़ सका और अपने सहपाठियों को बता सका।

बाद में मैंने अमन की शिक्षिका से पढ़ने और लिखने में उसकी रुचि के बारे में बात की। किन्तु वे बहुत प्रभावित नहीं लगीं। आख़िरकार, वे उसका आकलन इस आधार पर ही तो कर रही थीं कि वह कक्षा में पाठ के सवालों के जवाब देता है या नहीं और परीक्षा में प्रश्नों के सही उत्तर देता है या नहीं। अमन अभी तक यह सब नहीं कर पाया था। लेकिन उन्होंने कहा कि जब अमन दिलचस्पी लेता है तो वह अपना काम अच्छी तरह से करता है। जब मैं उनसे अगली बार मिली तो उन्होंने कहा कि अब वह बेहतर तरीक़े से पढ़ाई कर रहा है। ऐसा लग रहा था कि अब वे उसे एक अलग नज़रिए से देख रही हैं। अब उन्हें उसकी क्षमता में अधिक विश्वास था और उसके प्रति अधिक समानुभूति का भाव भी था। उसकी शिक्षिका ने मुझे बताया कि उन्होंने अमन को पढ़ना और लिखना सिखाने में कई महीने लगाए हैं। उन्होंने उससे कई बार अक्षर, शब्द और वाक्य लिखवाए, इस उम्मीद में कि उसमें सुधार आएगा। थोड़ा सुधार होता और वह फिर से वहीं वापस आ जाता जहाँ वह था।

मैंने सरकारी स्कूल की कक्षाओं में कम ही समय बिताया है, लेकिन एक बात स्पष्ट है— बच्चा आमतौर पर अपनी क्षमताओं के बारे में अपने शिक्षक की धारणा के अनुरूप आचरण करता है। यदि मेरे शिक्षक का मानना है कि मैं एक शरारती, लापरवाह बच्ची हूँ, जो पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे सकती है या अपने काम को ठीक से नहीं कर सकती है तो मैं वैसी ही बनूँगी। प्रत्येक कक्षा में शिक्षक स्वाभाविक रूप से बच्चों के काम के बारे में अपनी शुरुआती धारणा के आधार पर विद्यार्थियों को श्रेणीबद्ध करने का प्रयास करता है। कक्षा में अच्छे विद्यार्थी होते हैं, क़ाबिल विद्यार्थी होते हैं, और कुछ ऐसे भी होते हैं जिनकी मदद करने से भी कोई लाभ नहीं होता। दुर्भाग्य से अमन इस आख़िरी श्रेणी में आता था। लेकिन कहानी कहने के तरीक़े ने उस धारणा को तोड़ने में मदद की। कहानी कहने के माध्यम से अमन ने न केवल किताबों को देखने में रुचि ली बल्कि वह और अधिक कहानियाँ सुनने लगा था, उन्हें दूसरों को सुनाने लगा था, पात्रों और संवादों पर टिप्पणी करने लगा था और इतना ही नहीं अब वह अपने दम पर कहानियाँ पढ़ भी लेता था।

इस अनुभव से मेरा यह विश्वास दृढ़ हुआ कि सभी बच्चे सीख सकते हैं। अमन ने मुझे सिखाया कि यदि प्रत्येक बच्चे को एक क़ाबिल विद्यार्थी माना जाए तो वह सीखने में दिलचस्पी लेगा। हर कोई चाहता है कि वह सब कार्य अच्छी तरह से करे। इसके लिए उन्हें बस ज़रूरत है हमारे समर्थन की और उनमें विश्वास रखने की। ऐसा करने का एक सबसे अचूक तरीक़ा है— किताबों से, अपने रोज़मर्रा के अनुभवों से, शिक्षकों और विद्यार्थियों के जीवन से अधिक से अधिक कहानियों को कक्षा में लाना। इन रोज़मर्रा की कहानियों से, बच्चों की चुनी हुई कहानियों को सुनाने या कहानी पढ़ने से, शिक्षकों को प्रत्येक बच्चे के साथ जुड़ने का मौक़ा मिल सकता है। कहानियों से विशुद्ध वार्तालाप, प्रश्न, सन्देह, भय और अन्य भावनाओं की अभिव्यक्ति करने का अवसर मिलता है और कल्पना समृद्ध होती है।



सोनिया खुदनपुर रुद्रप्रयाग, उत्तराखण्ड में कार्यरत हैं। वे जुलाई 2018 से अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन में अँग्रेज़ी भाषा की टीम का हिस्सा हैं। सोनिया ने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से एमए की (शिक्षा) की स्नात्तकोतर उपाधि ली है। उन्होंने पत्रकारिता में स्नात्तकोत्तर डिप्लोमा भी किया है और लगभग तीन वर्षों तक मीडिया में कार्य किया है। फाउण्डेशन में वे— सरकारी स्कूलों में बच्चों के साथ अन्तःक्रिया के माध्यम से शिक्षण-अधिगम के बारे में सीखने, शिक्षकों के साथ काम करने और भाषा-शिक्षण पर सत्र और कार्यशालाओं का आयोजन और सुगमीकरण करके उनकी सहायता करने के काम में व्यस्त हैं। उनसे sonia.khudanpur@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल